शास्त्र में कथन पद्धति - नयों का सामान्य स्वरूप

- नय
  - द्रव्यार्थिक नय
    - द्रव्य मुख्य ,
    - पर्याय गौण
  - पर्यायार्थिक नय
    - पर्याय मुख्य ,
    - द्रव्य गौण

शास्त्र में कथन पद्धति

- इस शास्त्र में पर्यायार्थिक नय की मुख्यता से वस्तुस्वरूप का कथन है।
- अर्थात् - एक द्रव्य का दुसरे द्रव्य के साथ संबंध भी बताया है।
- वह मात्र निमित्त - नैमित्तिक संबंध है।
- भिन्न द्रव्यों में कर्ता - कर्म संबंध किंचित् मात्र भी नहीं हो सकता है।
- जहाँ कार्य और उनके निमित्त का ज्ञान कराना हो - वहाँ निमित्त की मुख्यता से कथन करने में आता है।
- इस शास्त्र में भी निमित्त की मुख्यता से बहोत कथन है।

यर्थाथत: एक द्रव्य दुसरे द्रव्य का कुछ नहीं कर शकता है। वास्तव में ऐसा ही वस्तुस्वरूप है।

शास्त्र में कथन पद्धति - पर्यायार्थिक नय के कथन का प्रयोजन

- **दृष्टांत** - साधकदशा की भूमिकानुसार राग और निमित्त-नैमित्तिकपने का सुमेल होता है। उससे विरुद्ध नहीं होता, इस तथ्य का ज्ञान कराने को व्यवहार नय और उसके विषय का कथन होता है।
- व्यवहार नय के प्रतिपादक सूत्रों की टीका में उस कथन के भावों को स्पष्ट किया है और निश्चय नय का स्वरूप समझाया गया है।
- टीका के अभ्यास से धर्म जिज्ञासुओं को सत्यस्वरूप समजने में सुगमता होगी।

शास्त्र की टीका के आधारभूत शास्त्र

- श्री सर्वार्थसिद्धि
- श्री तत्त्वार्थ राजवार्तिक
- श्री तत्त्वार्थ श्लोकवार्तिक
- श्री अर्थप्रकाशिका
- श्री समयसार
- श्री प्रवचनसार
- श्री पंचास्तिकायसंग्रह
- श्री नियमसार
- श्री धवलाशास्त्र
- श्री मोक्षमार्ग प्रकाशक
- और अन्य सत् शास्त्र

पूज्य गुरुदेवश्री का मार्गदर्शन

- परमपूज्य सत्पुरुष अध्यात्मयोगी परमसत्य जैनधर्म के मर्मज्ञ एवं अद्वितीय उपदेशक श्री कानजीस्वामी की प्रेरणा से ही यह टीका बनी है।
- उन्होंने स्वयं इस शास्त्र को पढकर, इस में यथोचित मार्गदर्शन एवं सूचन दिए है।
- जो शास्त्र में संपूर्ण रूप से समाहित कर के इस टीका का प्रकाशन हुआ है।
- इस तरह यह टीका संपूर्णत: उनके आशीष का ही फल है।

मुमुक्षु पाठकों को सूचना

- शास्त्र का अध्ययन:
  - धर्मबुद्धि से करना
  - मध्यस्थभाव से करना
  - सूक्ष्म दृष्टि से करना

सत् शास्त्र का धर्मबुद्धि द्वारा अभ्यास करना सम्यग्दर्शन का कारण है

प्रस्तावना के मुख्य बिन्दु

- शास्त्र के कर्ता तथा शास्त्र की टीकाएँ - [सामान्य परिचय स्लाईड: २ - ४]
- शास्त्र के नाम की सार्थक्ता
- शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप
- शास्त्र में कथन पद्धति
- शास्त्र की टीका के आधारभूत शास्त्र
- पूज्य गुरुदेवश्री का मार्गदर्शन
- मुमुक्षु पाठकों को सूचना

शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप

क्र॰	अध्याय	विषय	सूत्र संख्या
१॰	१	जीव तत्त्व	३३
२॰	२	जीव तत्त्व	५३
३॰	३	जीव तत्त्व	३९
४॰	४	जीव तत्त्व	४२
५॰	५	अजीव तत्त्व	४२
६॰	६	आस्रव तत्त्व	२७
७॰	७	आस्रव तत्त्व	३९
८॰	८	बंध तत्त्व	२६
९॰	९	संवर व निर्जरा तत्त्व	४७
१०॰	१०	मोक्ष तत्त्व	९
	१० अध्याय	कुल संख्या	३५७

शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय १

- प्रथम अध्याय में ३३ सूत्र है।
- उसमें पहले ही सूत्र में निश्चयसम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र, तीनों की एकता को मोक्षमार्गरूप से बतलाकर
- फिर निश्चय सम्यग्दर्शन का विवेचन किया है।
- और निश्चय सम्यग्ज्ञान का विवेचन किया है।

शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय २

- दूसरे अध्याय में ५३ सूत्र हैं;
- उसमें जीवतत्त्व का वर्णन है।
- जीव के पाँच असाधारण भाव,
- जीव का लक्षण
- तथा इन्द्रिय, योनि, जन्म, शरीरादि के साथ के सम्बन्ध का विवेचन किया है।

शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय ३ , ४

- तीसरे अध्याय में ३९ तथा चौथे अध्याय में ४२ सूत्र हैं।
- इन दोनों अध्यायों में संसारी जीवों को रहने के स्थानरूप अधो, मध्य और ऊर्ध्व - इन तीन लोकों का वर्णन है
- और नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य तथा देव - इन चार गतियों का विवेचन है।

शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप

क्र०	अध्याय	विषय	सूत्र संख्या
१०	१	जीव तत्त्व	३३
२०	२	जीव तत्त्व	५३
३०	३	जीव तत्त्व	३९
४०	४	जीव तत्त्व	४२
५०	५	अजीव तत्त्व	४२
६०	६	आस्रव तत्त्व	२७
७०	७	आस्रव तत्त्व	३९
८०	८	बंध तत्त्व	२६
९०	९	संवर व निर्जरा तत्त्व	४७
१००	१०	मोक्ष तत्त्व	९
	१० अध्याय	कुल संख्या	३५७

शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय ५

- पाँचवें अध्याय में ४२ सूत्र हैं
- और उसमें अजीवतत्त्व का वर्णन है;
- इसलिए पुदगलादि अजीवद्रव्यों का वर्णन किया है।
- तदुपरान्त द्रव्य, गुण, पर्याय के लक्षण का वर्णन बहुत संक्षेप में विशिष्ट रीति से किया है - यह इस अध्याय की मुख्य विशेषता है।

शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप

क्र॰	अध्याय	विषय	सूत्र संख्या
१॰	१	जीव तत्त्व	३३
२॰	२	जीव तत्त्व	५३
३॰	३	जीव तत्त्व	३९
४॰	४	जीव तत्त्व	४२
५॰	५	अजीव तत्त्व	४२
६॰	६	आस्रव तत्त्व	२७
७॰	७	आस्रव तत्त्व	३९
८॰	८	बंध तत्त्व	२६
९॰	९	संवर व निर्जरा तत्त्व	४७
१०॰	१०	मोक्ष तत्त्व	९
	१० अध्याय	कुल संख्या	३५७

शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय ६

- छठवें अध्याय में २७ सूत्र हैं,
- इस अध्याय में आस्त्रवतत्त्व का वर्णन है।
- प्रथम, आस्त्रव के स्वरूप का वर्णन करके,
- फिर आठों कर्मों के आस्त्रव के कारण बतलाये हैं।

शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय ७

- सातवें अध्याय में ३९ सूत्र हैं,
- इस अध्याय में आस्त्रवतत्त्व का वर्णन है।
- सातवें अध्याय में शुभास्त्रव का वर्णन है,
- उसमें बारह व्रतों का वर्णन करके उसका आस्त्रव के कारण में समावेश किया है।
- इस अध्याय में श्रावकाचार के वर्णन का समावेश हो जाता है।

शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप

क्र०	अध्याय	विषय	सूत्र संख्या
१०	१	जीव तत्त्व	३३
२०	२	जीव तत्त्व	५३
३०	३	जीव तत्त्व	३९
४०	४	जीव तत्त्व	४२
५०	५	अजीव तत्त्व	४२
६०	६	आस्रव तत्त्व	२७
७०	७	आस्रव तत्त्व	३९
८०	८	बंध तत्त्व	२६
९०	९	संवर व निर्जरा तत्त्व	४७
१००	१०	मोक्ष तत्त्व	९
	१० अध्याय	कुल संख्या	३५७

शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय ८

- आठवें अध्याय में २६ सूत्र हैं
- और उसमें बन्धतत्त्व का वर्णन है।
- बन्ध के कारणों का
- तथा उसके भेदों का
- और स्थिति का वर्णन किया है।

शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप

क्र॰	अध्याय	विषय	सूत्र संख्या
१॰	१	जीव तत्त्व	३३
२॰	२	जीव तत्त्व	५३
३॰	३	जीव तत्त्व	३९
४॰	४	जीव तत्त्व	४२
५॰	५	अजीव तत्त्व	४२
६॰	६	आस्रव तत्त्व	२७
७॰	७	आस्रव तत्त्व	३९
८॰	८	बंध तत्त्व	२६
९॰	९	संवर व निर्जरा तत्त्व	४७
१०॰	१०	मोक्ष तत्त्व	९
	१० अध्याय	कुल संख्या	३५७

शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय ९

- नववें अध्याय में ४७ सूत्र हैं
- और उसमें संवर तथा निर्जरा इन दो तत्त्वों का बहुत सुन्दर विवेचन है
- तथा निर्ग्रन्थ मुनियों का स्वरूप भी बतलाया है;
- इसलिए इस अध्याय में निश्चयसम्यक्चारित्र के वर्णन का समावेश हो जाता है।

शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - मोक्षमार्ग की पूर्णता

- पहले अध्याय में निश्चयसम्यग्दर्शन तथा निश्चयसम्यग्ज्ञान का वर्णन किया था
- और इस नववें अध्याय में निश्चयसम्यक्चारित्र का (संवर, निर्जरा का) वर्णन किया;
- इस प्रकार सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप मोक्षमार्ग का वर्णन पूर्ण होता है।

शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप

क्र॰	अध्याय	विषय	सूत्र संख्या
१॰	१	जीव तत्त्व	३३
२॰	२	जीव तत्त्व	५३
३॰	३	जीव तत्त्व	३९
४॰	४	जीव तत्त्व	४२
५॰	५	अजीव तत्त्व	४२
६॰	६	आस्रव तत्त्व	२७
७॰	७	आस्रव तत्त्व	३९
८॰	८	बंध तत्त्व	२६
९॰	९	संवर व निर्जरा तत्त्व	४७
१०॰	१०	मोक्ष तत्त्व	९
	१० अध्याय	कुल संख्या	३५७

शास्त्र के विषय - अध्यायों का विशेष स्वरूप - अध्याय १०

- दसवें अध्याय में नव सूत्रों द्वारा
- मोक्षतत्त्व का वर्णन करके
- श्री आचार्यदेव ने यह शास्त्र पूर्ण किया है।

शास्त्र के विषय - तत्त्वज्ञान का भण्डार

- निश्चयसम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्ररूप मोक्षमार्ग
- प्रमाण-नय-निक्षेप
- जीव-अजीवादि सात तत्त्व
- ऊर्ध्व-मध्य-अधो: तीन लोक
- चार गतियाँ
- छह द्रव्य और
- द्रव्य-गुण-पर्याय

सहर्ष आभार

मोक्षशास्त्र की पाठशाला के प्रेरणास्तोत्र एवं सहयोगी

- वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु, पू॰ गुरुदेवश्री आदि ज्ञानी धर्मात्मा
- आदरणीय समस्त सहयोगी विद्वानगण
- श्री सीमन्धरस्वामी दि॰ जिनमंदिर, विले पार्ला के समस्त ट्रस्टीगण एवं मुमुक्षुगण
- श्री दि॰ जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, सोनगढ़
- श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
- **www.atmadharma.com**
- भारतीय ज्ञान पीठ

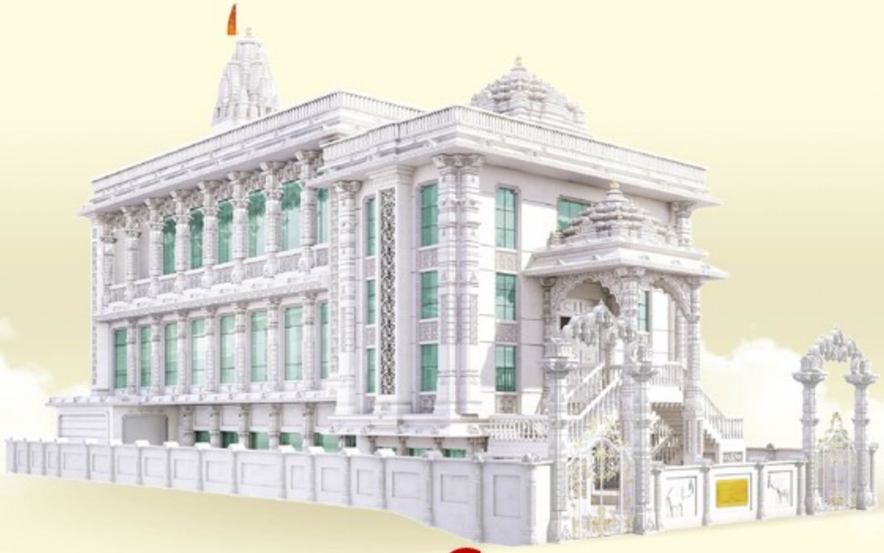

तत्त्वार्थसूत्र

विशेष परिचय पूर्ण